विशद
दीपवाली पूजन

रचयिता : श्री विशद सागर जी महाराज

:: नमनकर्त्ता ::

श्री अशोक कुमार जी जैन

राज जैन

11, नन्दपुरी, आर्य नगर, ज्वालापुर

हरिद्वार मो.: 9719012630

कृति	:	विशद दीपावली पूजन
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन		: ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री राजेशकुमार जैन अलवर 9414016566 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य	:	21/- रु. मात्र
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 ई-मेल : pkjainparas@gmail.com

दीपावली कब, क्यों और कैसे मनाएँ

प्रति वर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस को भारतीय सभ्यता में दीपावली के रूप में मनाया जाता है। दीपावली मनाने का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ इसके बारे में विभिन्न साम्प्रदायों की अलग-अलग मान्यताएँ प्रचलित हैं। जैनधर्म का मानना है कि उस दिन प्रात:काल भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था और सांयकाल उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस उपलक्ष्य में दीपावली का पर्व दीपमालिका के रूप में मनाया जाता है।

एक मत के आधार पर यह माना जाता है कि रावण का वध करके राम का अयोध्या आगमन एवं राज्याभिषेक हुआ था, एक मान्यता है कि कृष्ण का द्वारिका गमन हुआ था, एक मान्यता यह भी है कि पाण्डवों का तेरह वर्ष वनवास पूर्ण करके इन्द्रप्रस्थ में आगमन हुआ था, इस दिन विक्रमादित्य का राज्याभिषेक हुआ था या सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की थी, गुप्तकाल का उदय इस दिन मानते हैं। पौराणिक कथा है कि महाराजा पृथु ने पृथ्वी का दोहन किया था, गौतम को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, किसी की मान्यता

यह भी है कि परम योगी रामकृष्ण परमहंस एवं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आज के दिन नश्वर देह का त्याग किया था। सिक्ख समाज की मान्यता है कि उनके छठवें गुरु गोविन्द सिंह की कारावास से मुक्ति हुई थी इत्यादि मान्यताओं के बीच पौराणिक कथाएँ भी प्रचलित हैं जैसे-कथा है कि नरकासुर ने कृष्ण से वरदान माँगा था कि उसके मृत्यु के दिन को उत्सव के रूप में मनाया जाए, अनेक दीप जलाए जाएँ इसलिए दीपावली मनाई जाती है। एक कथा है कि राजा हेम का पुत्र बहुत सुन्दर था; किन्तु ज्योतिषी ने घोषणा की कि पुत्र शादी के चौथे दिन ही मर जाएगा होनी को कौन टाल सकता है। यह सोच राजा चुप रहा। युवा होते ही राजकन्या से विवाह हो गया। राजकन्या को यह पता चल गया एक बार उसने देखा भयंकर नाग फुँकार मारता हुआ महल की ओर बढ़ता आ रहा है तब उसने सुन्दर इत्र पुष्प माल रास्ते में बिछा दिए तथा कर्णप्रिय संगीत की मधुर ध्वनि छेड़ दी और नागराज को मुग्ध कर लिया। कहा भी है-

पूंजी लाओ प्रेम की, गाओ मीठी राग।
वश होने पर नाग के, भले नचाओ नाग॥

नाग को राजकन्या ने वश में कर लिया तब नागराज ने वरदान माँगने को कहा। कन्या ने वचनबद्ध करके अपना सौभाग्य माँगा तब नागराज ने अभयदान दिया तब राजा ने सारे राज्य में दीपमालिका से हर्ष मनाया तब से दीपमालिका रूप में दीपावली मनाई जाती इत्यादि। इस दिन आचार्य भरतसागरजी की समाधि होने से समाधि दिवस मनाया जाता है।

कुछ भी हो जिनवाणी को प्रमाण मानते हुए सभी दीपावली भगवान महावीर के निर्वाण और गौतम के केवलज्ञान के उपलक्ष्य में मनाते हैं।

दीपावली मनाने के भी विभिन्न तौर तरीके हैं। कहीं-कहीं लोग लक्ष्मी पूजन करते हैं, कहीं लक्ष्मी, सरस्वती एवं गणेश की पूजन करते हैं, कहीं लोग अपने (क्षत्रिय) अस्त्र-शस्त्र की पूजन करते हैं, वैश्य लोग अपने तराजू, मीटर इत्यादि पूजते हैं, दीपमालिका के साथ लोगों में जुआँ खेलने का प्रचलन है। कहीं पर लोग पटाखे, फुलझड़ी जलाकर धूम धड़ाका करते हैं, कहीं-कहीं पर लोग जानवरों को लड़ाते उनके सींग, पूंछ आदि रंगते हैं, कहीं लोग तिजोरी की पूजा करते हैं तो कहीं सोना-चाँदी एकत्र करके

उस पर भोग लगाते हैं किन्तु यह उचित नहीं होता जब भगवान महावीर का निर्वाण हुआ तो निर्वाण लाडू चढ़ाकर पूजा करना और गोधूली में 16, 21 अथवा 25 दीपक जलाकर भगवान महावीर एवं गौतम गणधर की पूजन करके दीपावली मनाना ही श्रेष्ठ है जैसाकि आगम में उल्लेख आया है कि गौतम स्वामी को सायं गोधूलि वेला में केवलज्ञान हुआ था तो उसी समय दीपावली मनाना उचित है। जिसकी विधि आगे पुस्तक में दी जा रही है।

––आचार्य विशदसागर

लोग कहते हैं इंसान जन्म से नहीं
कर्म से महान होता है।
कोई कहता है इंसान कर्म से
नहीं धर्म से महान् होता है॥
माँ त्रिशला का नंदन, जन्म से,
कर्म से, धर्म सबसे महान हो गया।
बालक वर्धमान "विशद ज्ञान" प्राप्त करके,
भगवान हो गया॥

शुभ दीपावली

इसके बाद बहियों पर सांथिया बनायें जैसा नीचे बना है और श्री को पर्वताकार लिखें।

नई बही के पहले पेज पर सबसे ऊपर लिखें:-
श्री ऋषभाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतमगणधराय नमः श्री केवलज्ञानाय सरस्वत्यै नमः, श्री लक्ष्म्यै नमः, श्री वर्द्धताम् लिखें फिर नीचे श्री का पर्वताकार लेखन करें। बहियों के ऊपर मीठा, पान, हल्दी आदि समान रख दें। पश्चात् श्री वर्धमानाय नमः मम सर्व सिद्धिर्भवतु, काम मंगल्योत्सवाः सन्तु पुष्प वर्धताम् धनं वर्धताम् पढ़कर बही खातों पर अर्घ चढ़ायें। इसके बाद मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें **श्री लीलायतनं माहीकुल ग्रहं कीर्ति प्रमोदास्पदं, वाग्देवी रति केतनं जय रमा क्रीडानिधानं महत।**

सः स्यात्सर्वमहोत्सवैक भवनं यः प्रार्थितार्थ प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादप-दलच्छाया जिनाङ्घ्रिद्वयम्॥
श्लोक पढ़कर सांथियाँ बनावें। पश्चात् लक्ष्मी पूजन करें और लक्ष्मी पुण्य शांति विसर्जन करें।

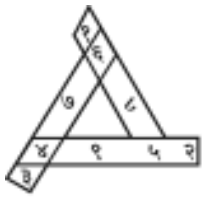

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बही खाते पर लिखें, हल्दी, केशर या चन्दन से तथा निम्न मंत्र की एक माला अवश्य जपें। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

इस यंत्र को दीपावली के दिन केशर या सिन्दूर से दुकान पर दायें हाथ पर बही पर लिखें।

इसको दीपावली के दिन दुकान के अन्दर दीवार पर सामने लिखें, मंगल स्थापना के दाहिने ओर।

दोनों यंत्रों की अष्ट द्रव्यों से पूजा करें।

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्याः जिन शासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः॥
श्रीसिद्धांत-सुपाठकाः, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम्॥

समय हो तो मंगलाष्टक पूरा पढ़ें।

दीपावली पूजन विधि

सामग्रीः अष्ट द्रव्य थाली, दीपक, मंगल कलश, सरसों, लाल कपड़ा, मौली, श्रीफल, अगरबत्ती, जिनवाणी, चौकी पाटा 2, कुमकुम, केसर घिसी हुई, कोरे पान 10, कलम दवात, फूलमालायें, नई बहियाँ, (मीठा, दूरवा, हल्दी)।

सायंकाल को उत्तम गौधूलि बेला में अपनी

पूजा प्रारम्भ-

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

यह मंत्र पढ़कर पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का तिलक करें।

मंत्र-ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सभी के दाहिने हाथ में मौली बाँध दें। यह मंत्र पढ़कर सभी लोग अपने ऊपर थोड़ा सा जल छिड़क लें।

मंत्र- ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतं वर्षणे, अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

इसके बाद मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्प छिड़कते जायें। इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बही खाते पर लिखें, हल्दी, केशर या चन्दन से तथा निम्न मंत्र की एक माला अवश्य जपें।

जाप-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

मंगल कलश स्थापना मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं मज्जिन शासने भगवतो महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूलसंघे मध्यलोके भरत क्षेत्रे आर्य खण्डे भारत देशे....प्रदेशे. ...नगर....श्री मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं ह्वं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना मंत्र-

रुचिर दीप्ति करं शुभ दीपकं सकल लोक सुखाकर मुज्ज्वलं।
तिमिर जाल हरं प्रकरं सदा, किल करोमि, सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरं हरं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

लघु विनय पाठ-1

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥

मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥4॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥5॥

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधान॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव.स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)॥

अर्घावली

मूलनायक सहित समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

अष्टोत्तर शत् नाम के द्वारा, माँ को नित प्रति ध्याते है।
शास्त्र विशारद वे कवि वक्ता, प्रवचन पटुता पाते हैं॥
उत्तम यश वैभव सम्पत्ती, शुभ सौभाग्य जगाते हैं।
ब्रह्म सूरि मुनि कहते वे मुनि, श्रुत केवलि बन जाते हैं॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर मुखकमल विनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः नमः

एक सौ सत्तर तीर्थंकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश॥
क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश॥

ॐ ह्रीं ढ़ाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम्परागत आचार्यों का सामूहिक अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरु श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर गुरु, भरत सिन्धु पद पूजें आज॥

गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, 'विशद' करें चरणों अर्चन।
पूज्य सर्व आचार्यों के पद, मेरा बारम्बार नमन॥

ॐ ह्रूं गुरु परम्पराचार्य सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाये है।
महाव्रतों को धारणकर ले, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरुचरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान का, करते है शुभ ध्यान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

हम चढ़ा रहें हैं यहाँ नीर, जन्मादिक की अब मिटे पीर।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।1।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

महके चन्दन की बहु सुवास, संसार ताप का होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।2।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

यह चढ़ा रहे अक्षत महान, हम अक्षय पद पायें प्रधान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।3।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाते यहाँ खास, अब काम रोग का हो विनाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।4।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यहाँ आन, हो क्षुधा रोग की पूर्ण हान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।5।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम दीप से करते है प्रकाश, अब मोहमहातम होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।6।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

यह जला रहे है यहाँ धूप, अब नश जायें वसु कर्म भूप।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।7।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाते है जिनेश, पायें हम मुक्ती फल विशेष।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।8।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तायं फलं निर्व. स्वाहा।

हम चढ़ा रहे है यहाँ अर्घ्य, हो सुपद प्राप्त हमको अनर्घ्य।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।9।।
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।
ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)–हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर।।

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभु जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं।।1।।
पाए प्रभु जी गर्भ अन्तिम, माता त्रिशला जानिए।
जिन माता देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए।।2।।
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरु पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।।3।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाए हैं।।4।।
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम "विशद" अपनाए हैं।
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।।5।।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।।6।।
फिर कर्म सारे नाश करके, मोक्ष पद पाए अहा!।

पावापुरी का पदम सरवर, मोक्ष स्थल शुभ रहा।।7।।

दोहा-ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हें कर्म विनाश।
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वाश।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।
सम्यक् दर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।।

केवल ज्ञान लक्ष्मी पूजन

उभय लक्ष्मी प्राप्त हैं, महावीर भगवान।
लक्ष्मी केवल ज्ञान शुभ, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी!समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएँ, अपना सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम ताप नशाने आए।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएँ, अपना सौभाग्य जगाएँ।।2।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षत नाथ चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।4।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा आहार विनशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।5।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।6।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्यं चढ़ाएँ।
हम ज्ञान लक्ष्मी पाएं, अपना सौभाग्य जगाएं।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा अर्हं केवलज्ञान लक्ष्मी! अर्घ्यंनिर्वं स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ज्ञान महालक्ष्मी कही, जग में पूज्य त्रिकाल।
शिव सुख पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

गुण अनंत के धारी होते, तीन लोक में जिन अरिहंत।
दर्श अनन्त प्राप्त करते हैं, पाते हे प्रभु! ज्ञान अनन्त।।
पाते हें सम्यक्त्व वीर्य गुण, समवशरण के धारी नाथ!
सौ सौ इन्द्र चरण में आकर, झुका रहे हैं अपना माथ।।1।।
केवलज्ञान प्राप्त करते हैं, चौंसठऋद्धी पाते देव!
भवि जीवों का श्री चरणों में, हो अवगाहन श्रेष्ठ सदैव।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, द्रव्य चराचर जान रहे।
गुण पर्याय जानने वाले, केवलज्ञानी श्रेष्ठ कहे।।2।।
जो प्रत्यक्ष ज्ञान को पाते, कहा गया जग में असहाय।

नहीं सहायक जिनका कोइ, आप सभी के बने सहाय॥
शास्वत सौख्य अनन्त प्राप्त जो, करने वाले जगत महान।
वृहस्पति भी जिन महिमा गानें, में समर्थ न रहा प्रधान॥3॥
श्री जिनेन्द्र की महिमा जग में, कही गई है अपरम्पार।
मेरे जैसे अल्प बुद्धि फिर, करें प्रभु कैसे गुणगान॥
''विशद'' भाव के पुष्प चरण में, करता हूं प्रभु यहां प्रदान।
अल्प काल में हम भी पायें, अतिशयकारी पद निर्वाण॥ 4॥
दोहा- ज्ञान लक्ष्मी श्रेष्ठ है, शिवसुख करे प्रदान।
जग का वैभव प्राप्त कर पावें पद निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा केवलज्ञान लक्ष्मी! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- ज्ञान लक्ष्मी पूजकर, सुखी बने संसार।
'विशद' ज्ञान पाके स्वयं पावे भवदधि पार॥

॥इत्याशीर्वाद॥

श्री गौतम गणधर (गणेश) पूजा

(स्थापना)

दिव्य देशना झेलते, गणधर कहे गणेश।
करते हैं आह्वान हम, उर में आज विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवाननं। ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने

नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमःअत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा स्वामिने नमः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री गणधर जी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा गौतम स्वामिने नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपा़र।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तेय-शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पूर्णार्घ्यं (छन्दः जोगीरासा)

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौंसठ ऋद्धी धारें।
चौदह सौ बावन गणधर नित, भविजन दुःख निवारें।
बीज बुद्धि आदिक ऋद्धी युत, गणधर मंगलकारी।
तिनको पूजें अष्ट द्रव्य से, सकल सौख्य करतारी।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर ऋषभसेनादि एकोनषष्ट्यधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा- गण नायक गणनाथ तुम, गणपति गणधर ईश।
गाएँ तव जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।1।।

पद्धरि छन्द

जय जय मुनि श्री गणधर प्रधान, जिनकी ध्वनि सुनते हैं महान।
कई मुनि श्रावक भी सुनें साथ, तव पद पूजें हम नित्य नाथ!।।2।।
तव दर्शन से सब कटें पाप, श्री तीर्थंकर के शिष्य आप।
गणधर मुनि चौंसठ ऋद्धिधार, भविजन को देते श्रेष्ठ सार।।3।।

शुभ द्वादशांग वाणी अपार, रचते गणधर मुनि ग्रन्थसार।
धर बीज बुद्धि ऋद्धी गणेश, चौदह पूरव रचते विशेष॥4॥
तुम गर्भ जन्म तप ज्ञान युक्त, जिन पूजा भक्ती से संयुक्त।
मन वांछित कारज सिद्ध सार, सुख रिद्धि सिद्धि धर हो अपार॥5॥
तुम कोष्ठ बुद्धि धारी महान, तव पूजन से हो कर्म हान
तव शरण गही हमने अपार, तुमको पूजें हम बार-बार॥6॥
मुनि गणधर जिन पूजा रचाय, अरु कर्म निर्जरा फिर कराय।
अक्षीण महानस-ऋद्धि धार, गणधर करते मंगल अपार॥7॥
हे दीन दयालु कृपा निधान, हमको अक्षय पद दो महान।
तुमसा न कोई दयावान, तुम जिन संतो में हो प्रधान॥8॥
महिमा का तुमरी नहीं पार, तुम हो भव्यों के कण्ठहार।
हम चरण वन्दना करें नाथ, तव चरण कमल में झुका माथ॥9॥
हम करें वन्दना चरण आन, दो हमको भी गुरु ज्ञान दान।
तव चरण झुकाते 'विशद' माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥10॥

दोहा- गणधर गुणपूजा करें, प्राणी भव्य महान।
मन वांछित फल प्राप्त कर, अन्त लहें निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवानां श्री वृषभसेनादि द्विपञ्चाशत् अधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलि:।

कवित्त छन्द:

जिनवर चौबीसों तीर्थंकर, तीन लोक में श्री सुख दाय।
तिनके समवशरण को पूजैं, जो भवि आठों द्रव्य सजाय॥
वे धन धान्य सौख्य समृद्धी, अतिशय पावें ज्ञान अपार।
'विशद' इन्द्र अहमिन्द्र दिव्यपद, अनुक्रम से पावें शिव द्वार॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद:)

चौंसठ ऋद्धि सम्बंधि 64 व्रतों के चौंसठ मंत्र

बुद्धि ऋद्धि के 18 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
2. ॐ ह्रीं मन: पर्ययज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
4. ॐ ह्रीं बीज बुद्धिऋद्धये नम:।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नम:।
6. ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धिऋद्धये नम:।
7. ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
8 . ॐ ह्रीं दूरास्त्वादित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नम:।

14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धऋद्धये नमः।
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः।
18. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।

विक्रिया ऋद्धि के 11 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं महिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रिया ऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रिया ऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रिया ऋद्धये नमः।
10. ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रिया ऋद्धये नमः।
11. ॐ ह्रीं कामरूपणीविक्रिया ऋद्धये नमः।

चारण ऋद्धि के 9 मंत्र -

1. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः।

4. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः।

तपऋद्धि के 7 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दीप्ततपऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं तप्ततपऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं महातपऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं घोरतपऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्व ऋद्धये नमः।

बलऋद्धि के 3 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः।

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः।

3. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मलौषधिषधिऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं विप्रुषौषिधिऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सवौषधिऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः।

रसऋद्धि के 6 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं क्षीरस्रावरिसऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मधुस्रावरिसऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अमृतस्रावरिसऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सर्पिस्रावरिसऋद्धये नमः।

अक्षीणऋद्धि के मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं सर्पिस्रावरिसऋद्धये नमः।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥

जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

ॐ शांति-शांति-शांति

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)(कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ (ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरें आशिका शीश।
'विशद' कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

निर्वाण काण्ड

दोहा– वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
विशद काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज॥

(शम्भू छंद)

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश॥
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण॥
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार॥
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान॥
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण॥
श्री बलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम माथ॥
राम हनू सुग्रीव नील अरु गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील॥
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज॥

रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार॥
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ॥
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि सुगिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार॥
वंशस्थल के पश्चिम दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण॥
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण॥
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश॥
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण॥
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार॥
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्पार।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि के, शिवपद का पाए हैं सार॥
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।

गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण॥
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ॥
पार्श्वनाथ जिन नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें प्रधान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥

(अञ्चलिका)

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ महा इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प चरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, की करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दु:ख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥

इति

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज: कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती,
हो वीरा, हम सब उतारे तेरी आरती।।टेक।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए–2।
धन कुबेर ने खुश होकर के–2, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा....।।1।।
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब–2, मन में हर्ष बढ़ावे।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावे।
सब मिल उतारे थारी आरती...हो वीरा।।2।।
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी-2, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा।।3।।
दशें शुक्ल वैशाख माह में-2, केवल ज्ञान जगाये।–2
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु-2
'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है प्यारी।
जिनबिम्बों की हम करते आरती...हो वीरा।।4।।

केवलज्ञान लक्ष्मी आरती

केवलज्ञान लक्ष्मी की हम, आरति करने आए।
घृत का दीप जलाकर हमने, हर्ष-हर्ष गुण गाए॥
हो माता, हम सब उतारे तेरी आरति....।टेक॥
चउ अनुयोग समाए हैं शुभ, तेरे ज्ञान में माता।
चार हाथ को पाने वाली, देने वाली साता॥1॥
हो माता...
सरस्वती है साथ में तेरे, श्री जिनेन्द्र की वाणी।
श्रद्धा भक्ती से धारे जो, है उनकी कल्याणी॥2॥
हो माता...
गणधर रहे पास में माँ के, जो मुनियों के स्वामी।
हे गणेश! तुम 'विशद' ज्ञान पा, बने मोक्षपथ गामी॥3॥
हो माता...
प्रातः वीर निर्वाण हुआ शुभ, संध्या गौतम स्वामी।
केवलज्ञान जगा करके जो, हो गये अन्तर्यामी॥4॥
हो माता...
जिनकी अर्चा करने हम सब, दीपावली मनाते।
दीप जलाकर पूजा करके, भजनावलियाँ गाते॥5॥
हो माता...

महावीराष्टक स्तोत्र

(शम्भू छन्द)

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, ध्रौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारे।।
जग को मुक्ति पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।1।।

नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीन।।
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।2।।

नमित सुरों के मुकुट मणि की, आभा हुई है कांतिमान।
दोनों चरण कमल की भक्ति, भक्तजनों को नीर समान।।
दुःखहर्ता सुखकर्त्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।3।।

हर्षित मन होकर मेढ़क ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगति अवतार लिए।।
क्या अतिशय नर भक्ति आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।4।।

स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन रहे।
राग द्वेष से रहित आप हैं, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।5।।
जिनके नयनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमल।।
बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।6।।
तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमल।।
सुख शांति शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।7।।
महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधु हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभु हों, मम् नयनों के पथगामी।।8।।

दोहा- भागचंद भागेन्दु ने, भक्ति भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथ।।
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गति को पाय।
भाषा पढ़के काव्य की, 'विशद' वीर बन जाये।।

पावापुर चालीसा

दोहा- पावापुर उद्यान के, महावीर भगवान।
पद्म सरोवर से प्रभू, पाए पद निर्वाण।।
पावन भूमी तीर्थ की, पावन तीरथ राज।
चालीसा गाए यहाँ, मिलकर सकल समाज।

(चौपाई)

मध्य लोक जानो शुभकारी, जम्बूद्वीप की महिमा न्यारी।।1।।
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया, जिसमें भारत देश बताया।।2।।
प्रान्त बिहार श्रेष्ठ शुभ जानो, बिहार शरीफ स्टेशन मानो।।3।।
रहा नवादा पास में भाई, पास गुणावा है सुखदायी।।4।।
पावापुर शुभ ग्राम बताया, मिलती जहाँ पे शीतल छाया।।5।।
सुखी जहाँ की जनता सारी, जिन चरणों की है बलिहारी।।6।।
पुण्य का फल पाते हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।।7।।
पावापुर उद्यान सुहाना, पद्म सरोवर जिसमें माना।।8।।
चौबीसवें तीर्थंकर भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।9।।
पाँच नाम सार्थक जो पाए, वर्धमान तीर्थंकर गाए।।10।।
सन्मति नाम आपका गाया, वीरनाम भी शुभ बतलाया।।11।।
प्रभु अतिवीर कहे जिन स्वामी, महावीर मुक्ती पथगामी।।12।।
त्रिशला जिनकी माता जानो, जिनके पितु सिद्धारथ मानो।।13।।
कुण्डलपुर के राज दुलारे, अन्तिम जिनवर बने सहारे।।14।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जग के भोग जिन्हे ना भाए।।15।।
तीस वर्ष में दीक्षा धारी, बने आप मुनिवर अनगारी।।16।।
तप में बारह वर्ष बिताए, निज आतम का ध्यान लगाए।।17।।
कर विहार प्रभु जी तब आए, ऋजुकूला नदि का तट पाए।।18।।

कर्म घातिया आप नशाएँ, केवल ज्ञान प्रभू प्रगटाए।।19।।
समवशरण आ देव रचाए, नत हो जय जय कार लगाए।।20।।
विपुलाचल पर स्वामी आये, दिव्य देशना आप सुनाए।।21।।
तीस वर्ष यूँ समय बिताए, कर विहार पावापुर आए।।22।।
चौदह दिन का समय बताया, योग निरोध आपने पाया।।23।।
कार्तिक कृष्ण अमावश जानो, ऊषाकाल श्रेष्ठ पहिचानो।।24।।
कर्म अघाती आप नशाए, पद निर्वाण वीर जिन पाए।।25।।
धन्य हुई वह नगरी प्यारी, जनता सुखी हुई थी सारी।।26।।
अष्टादश गणराज्य बताए, सभी नृपति उत्सव करवाए।।27।।
अग्नि कुमार देव तव आए, मुकुटों से अग्नी प्रजलाए।।28।।
नख केशों को आप जलाए, भस्म सभी जन माथ लगाए।।29।।
पद्म सरोवर में शुभ जानो, जल मंदिर मंगलमय मानो।।30।।
श्वेत वर्ण का मंदिर गाया, सेतू लाल रंग का पाया।।31।।
चरण चिन्ह जिसमें शुभ गाए, जिनवर की महिमा दर्शाए।।32।।
तट पर जिन मंदिर शुभकारी, बने हुए हैं मंगलकारी।।33।।
महावीर जिन की प्रतिमाएँ, जग को मुक्ति पथ दर्शाएँ।।34।।
दूर-दूर से यात्री जाते, जिन चरणों के दर्शन पाते।।35।।
जिनकी पद रज माथ लगाते, अपने वह सौभाग्य जगाते।।36।।
तीर्थ वन्दना करने वाले, जग में होते जीव निराले।।37।।
मन में श्रद्धा भाव जगाते, वे प्राणी यह अवसर पाते।।38।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ, सुखानन्त पाके हर्षाए।।39।।
'विशद' भावना यही हमारी, पूर्ण करों तुम हे त्रिपुरारी।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पदा, पा हों श्री के नाथ।।